डॉ. रॉबर्ट वेन्नॉय , ओटी इतिहास, व्याख्यान 26

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वेन्नॉय और टेड हिल्डेब्रांड्ट

इसाक/रिबका और जैकब का प्रारंभिक जीवन

ई. इसहाक

1. उसका जन्म, जिनीस 17, 18 और 21

हमने कल अब्राहम के बारे में अपनी चर्चा समाप्त की, इसलिए हम आज दोपहर को राजधानी ई की ओर बढ़ रहे हैं, जो है: "इसहाक", जो आपकी रूपरेखा का पृष्ठ चार है। हम इसहाक पर अधिक विस्तार से चर्चा नहीं करने जा रहे हैं, हम बस कुछ टिप्पणियाँ करने जा रहे हैं। ध्यान दें कि वहां सात उपशीर्षक हैं, जिनमें से पहला है: "उसका जन्म, उत्पत्ति 17, 18 और उत्पत्ति 21।" उसके जन्म का वादा उत्पत्ति 17 पद 19 में किया गया है: परमेश्वर ने कहा, “तब परमेश्वर ने कहा, हां, परन्तु तेरी पत्नी सारा से तेरे लिये एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम इसहाक रखना। मैं उसके साथ अपनी वाचा बाँधूँगा जो उसके बाद उसके वंशजों के लिए अनन्त वाचा होगी।” और फिर अध्याय 18 में, आपके पास इसकी पुनरावृत्ति है, हमने इसे इब्राहीम के बारे में हमारी चर्चा के संबंध में देखा, लेकिन श्लोक 10 कहता है, "तब प्रभु ने कहा, 'मैं निश्चित रूप से अगले वर्ष इसी समय तुम्हारे पास लौटूंगा, और तेरी पत्नी सारा से एक पुत्र उत्पन्न होगा। अब सारा तंबू के द्वार पर, जो उसके पीछे था, सुन रही थी” और सारा हँस पड़ी। आपने श्लोक 14 में पढ़ा, “क्या प्रभु के लिए कोई भी चीज़ बहुत कठिन है? मैं अगले वर्ष नियत समय पर आपके पास लौट आऊंगा. सारा को एक बेटा होगा. सारा डर गई थी, इसलिए उसने झूठ बोला और कहा 'मैं नहीं हँसी।"

तब जन्म का वर्णन उत्पत्ति 21 में किया गया है, जहाँ आप पहली कविता में पढ़ते हैं, "प्रभु ने सारा से वैसा ही व्यवहार किया जैसा उसने कहा था और प्रभु ने सारा से वैसा ही किया जैसा उसने कहा था, सारा गर्भवती हुई, और इब्राहीम के बुढ़ापे में उसने एक पुत्र को जन्म दिया वह निश्चित समय जिस पर परमेश्वर ने उस से बात की थी।” अब आप पद 5 में पढ़ते हैं, "जब इब्राहीम 100 वर्ष का था तब उसके पुत्र इसहाक का जन्म हुआ।" हम जानते हैं कि सारा इब्राहीम से दस साल छोटी थी इसलिए वह 90 वर्ष की थी।

2. इसहाक की पेशकश की जा रही है, उत्पत्ति 223। उत्पत्ति 24 में उसका विवाह

ठीक है 2. आपकी शीट पर है: "इसहाक की पेशकश की जा रही है, उत्पत्ति 22।" हमने उस अध्याय पर अब्राहम के विश्वास के उच्च बिंदु के रूप में चर्चा की और मैं वापस जाकर उस अध्याय पर दोबारा चर्चा नहीं करने जा रहा हूँ, हालाँकि यह निश्चित रूप से इसहाक के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना है।

3. "उत्पत्ति 24 में उसका विवाह।" मैंने कल उस पर अप्रत्यक्ष रूप से चर्चा की और हमने मुक्तिदायक ऐतिहासिक छंदों के इस पूरे व्यवसाय को देखा, और पुराने नियम में इन ऐतिहासिक अंशों में से कुछ के उदाहरणात्मक उपयोग को देखा। लेकिन अध्याय 24 पर कुछ टिप्पणियाँ, मुझे लगता है कि हम देखते हैं कि इसहाक निष्क्रिय है, उसकी शादी उसके पिता ने अपने नौकर के माध्यम से तय की है, और उससे भी आगे, नौकर एक संकेत मांगता है और भगवान उस महिला को नामित करता है जो है इसहाक की पत्नी बनना। लेकिन शादी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसहाक और उसकी पत्नी रिबका के माध्यम से वादे की श्रृंखला जारी रहेगी। इसलिए इब्राहीम के भतीजे बतूएल की बेटी रिबका को नौकर को दिखाया गया कि वह इसहाक की पत्नी होगी। वह स्वेच्छा से नौकर के साथ वापस आने के लिए सहमत हो जाती है, और उसकी और इसहाक की शादी हो जाती है। बस इस रिश्ते से, बाद में आप देखते हैं कि जेरेड पूर्वज है और फिर इब्राहीम और नाहोर, जो मिल्का से शादी करता है, बथुएल नाहोर और मिल्का का बेटा है, और रिबका बेथुएल की बेटी है। तो यहाँ इब्राहीम की पंक्ति में, इसहाक ने रिबका से शादी की।

4. उनके पुत्र

अब, 4. आपकी शीट पर है: "उसके बेटे," यानी, इसहाक के बेटे, उत्पत्ति 25:19 और निम्नलिखित। उत्पत्ति 25:19 उत्पत्ति की पुस्तक में उन संरचनात्मक विभाजनों में से एक है, आपने पढ़ा, "ये इब्राहीम के पुत्र इसहाक की पीढ़ियाँ हैं, इब्राहीम ने इसहाक को जन्म दिया, इसहाक 40 वर्ष का था जब उसने रिबका को अपनी पत्नी के रूप में लिया, जो की बेटी थी पद्दनअराम का सीरियाई बतूएल, सीरियाई लाबान की बहन। इसहाक ने अपनी पत्नी के लिये यहोवा से प्रार्थना की,

क्योंकि वह बांझ थी। तब उस ने यहोवा से बिनती की, और उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हुई। बच्चे उसके भीतर एक साथ संघर्ष कर रहे थे और उसने कहा, "अगर ऐसा है, तो मैं ऐसी क्यों हूँ।" वह प्रभु से पूछने गयी। यहोवा ने उस से कहा, तेरे गर्भ में दो जातियां हैं, और तुझ से दो जातियां उत्पन्न होंगी, और एक जाति दूसरी जाति से अधिक बलवन्त होगी, और बड़ी छोटी की सेवा करेगी। और जब उसके प्रसव का दिन पूरा हुआ, तो क्या देखा, कि उसके पेट में जुड़वाँ बच्चे निकले, और जो पहला निकला, उसका पूरा शरीर रोएँदार वस्त्र के समान लाल निकला। उसने उसका नाम एसाव रखा, उसके बाद उसका भाई बाहर आया और उसके हाथ एसाव की एड़ी पर फँस गए। उसे जैकब कहा जाता था। और जब उसने उन्हें जन्म दिया तब
इसहाक तीन अंक का था ।" तो यहाँ फिर से ध्यान देने वाली बात यह है कि 20 वर्षों तक रिबका बंजर थी, श्लोक 20 में देखें "इसहाक 40 वर्ष का था जब उसने रिबका को अपनी पत्नी के रूप में लिया।" इसलिए जब याकूब और एसाव का जन्म हुआ, तो वह तीन अंक (60) वर्ष का था। इसलिए 20 वर्षों तक वह बंजर थी, और मुझे लगता है कि हम फिर से कह सकते हैं कि वादा किया गया बीज सामान्य प्राकृतिक प्रक्रियाओं के दौरान नहीं, बल्कि भगवान के विशेष हस्तक्षेप से आता है। क्योंकि आप श्लोक 21 में पढ़ते हैं, "इसहाक ने अपनी पत्नी के लिये यहोवा से प्रार्थना की, क्योंकि वह बांझ थी; और यहोवा ने उसकी बिनती की, और उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हुई।" इसलिए इसहाक प्रार्थना करता है, यहोवा उत्तर देता है, और तब रिबका को बताया जाता है कि उसके गर्भ में दो बच्चे हैं जो दो राष्ट्र बन जाएंगे और शायद, इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि बड़ा छोटे की सेवा करेगा।

5. इसहाक को वाचा की पुनः पुष्टि की गई है - उत्पत्ति 26:1-5

5. है: "इसहाक के लिए वाचा की पुष्टि की गई है, उत्पत्ति 26, श्लोक 1-5," "अब देश में अकाल पड़ा - इब्राहीम के समय के पहले अकाल के अलावा - और इसहाक पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के पास गया गेरार में . यहोवा ने इसहाक को दर्शन देकर कहा, मिस्र में मत जाओ; उस देश में रहो, जहां मैं तुम से कहता हूं, कि तुम रहो। थोड़ी देर इस देश में रहो, और मैं तुम्हारे संग रहूंगा, और तुम्हें आशीष दूंगा। क्योंकि मैं तुझे और तेरे वंश को ये सब देश दूंगा, और जो शपथ मैं ने

तेरे पिता इब्राहीम से खाई थी उसे पूरा करूंगा। यहां आपको इब्राहीम के वादों की पुनरावृत्ति मिलती है: "'मैं तुम्हारे वंशजों को आकाश के तारों के समान असंख्य बनाऊंगा और उन्हें ये सभी भूमियां दूंगा, और तुम्हारे वंश के माध्यम से पृथ्वी पर सभी राष्ट्र धन्य होंगे, क्योंकि इब्राहीम ने मेरी बात मानी और मेरी अपेक्षाओं, मेरी आज्ञाओं, मेरे नियमों और मेरे नियमों का पालन किया।" इस प्रकार इसहाक से वाचा के वादों की पुनः पुष्टि की गई। उसी अध्याय के श्लोक 24 में आप पढ़ते हैं: "उसी रात प्रभु ने उसे दर्शन देकर कहा: 'मैं तेरे पिता इब्राहीम का परमेश्वर हूं, मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरे वंश को बढ़ाऊंगा।" मेरे सेवक इब्राहीम की खातिर।" तो आप देखते हैं कि हम वादे की इस पंक्ति के साथ आगे बढ़ रहे हैं जैसा कि इसहाक से पुष्टि की गई थी।

इसहाक को उसकी पत्नी और उसके बेटे ने धोखा दिया - जनरल 27

आपकी शीट पर "अध्याय 27" है, जहां इसहाक को उसकी पत्नी और उसके बेटे ने धोखा दिया है, मुझे यकीन है कि आप अध्याय 27 की सामान्य कहानी से परिचित हैं, लेकिन परिणाम यह है कि इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देने का वादा किया है, यह सोचते हुए वह एसाव को आशीर्वाद दे रहा है। जो आशीर्वाद उसने याकूब को दिया वह वास्तव में याकूब का था। लेकिन एक मिनट के लिए, ऐसा प्रतीत होता है कि इसहाक यहां जो करने की कोशिश करता है, वह ईश्वर की पहले से प्रकट इच्छा के विपरीत कार्य करना है जब वह एसाव को आशीर्वाद देने का फैसला करता है। अध्याय के पहले भाग में देखें, वह एसाव को बुलाता है और उससे कहता है, श्लोक 4, "जो स्वादिष्ट भोजन मुझे प्रिय हो, वह मेरे लिये बना, और मेरे पास ले आ, कि मैं खाऊं; कि मरने से पहले मेरी आत्मा तुम्हें आशीर्वाद दे।" रिबका यह सुनती है, और पद 7 में रिबका कहती है, "मैंने तेरे पिता को तेरे भाई एसाव से यह कहते हुए सुना; मेरे लिए हिरन का मांस लाओ और मेरे लिए स्वादिष्ट भोजन बनाओ जिसे मैं खाऊं और मरने से पहले यहोवा के सामने तुम्हें आशीर्वाद दूं। अब यदि आप इसकी तुलना उत्पत्ति 25:23 से करते हैं जिसे हमने कुछ मिनट पहले पढ़ा था, तो आपको याद होगा कि याकूब और एसाव के जन्म के समय, प्रभु ने कहा था; "तुम्हारे गर्भ में दो राष्ट्र हैं, तुमसे दो तरह

के लोग पैदा होंगे, एक लोग मजबूत होंगे, बड़ा छोटे की सेवा करेगा।" ऐसा प्रतीत होता है कि इसहाक वास्तव में इसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था क्योंकि उसने याकूब को जो आशीर्वाद दिया था, यह सोचकर कि वह एसाव को दे रहा है, वह उसके विपरीत है। आप उत्पत्ति 27:29 में देखते हैं "लोग तुम्हारी सेवा करें और राष्ट्र तुम्हारे सामने झुकें: अपने भाइयों पर प्रभु बनो।"

लेकिन किसी भी मामले में, रिबका एसाव को आशीर्वाद देने के इसहाक के इरादे को सुनती है, और फिर वह धोखे की योजना को उकसाती है और याकूब से बात करती है और उससे कहती है, पद 8, "इसलिए अब मेरे बेटे, मेरी बात मानो, झुंड के पास जाओ और ले आओ वहाँ से मुझे बकरियों के दो अच्छे बच्चे मिले; और मैं उन्हें तेरे पिता के लिये उसकी रुचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाऊंगा, और तू उसे अपने पिता के पास ले जाना कि वह उसे खाए, और मरने से पहिले तुझे आशीर्वाद दे। जैकब इस सब के बारे में इतना निश्चित नहीं है, वह कहता है कि उसके पिता उसे महसूस कर सकते हैं, पद 12; "और मैं उसे धोखा देनेवाला जानूंगा, और आशीर्वाद नहीं, परन्तु शाप ही अपने ऊपर लाऊंगा।" उसका भाई बालों वाला था और वह चिकना था। उसकी माँ कहती है; "मुझ पर श्राप हो, मेरी बात मानो" और वह उसके हाथों और उसकी गर्दन के पिछले हिस्से पर बकरी के बच्चे की खाल लगाती है, और स्वादिष्ट भोजन बनाती है। वह स्वयं को एसाव के रूप में प्रस्तुत करते हुए इसहाक के पास जाता है।

इसहाक के विश्वास में विफलता के बावजूद परमेश्वर ने अपनी इच्छा पूरी की

अब, एलिसन, *द फादर्स ऑफ द कोवेनेंट* नामक पुस्तक में कहते हैं, "रिबका और जैकब ने योजना बनाई कि भगवान की इच्छा को कैसे पूरा किया जाए, जैसा कि उन्होंने स्पष्ट रूप से किया था, लोकप्रिय कहावत: भगवान उनकी मदद करते हैं जो खुद की मदद करते हैं।" मुझे लगता है कि सवाल यह है कि क्या यह एक उचित प्रक्रिया थी? ल्यूपोल्ड ने अपनी टिप्पणी में मानवीय सरलता पर आधारित विश्वास की अपर्याप्तता की बात की है। मुझे नहीं लगता कि आप वास्तव में रिबका और जैकब के कार्यों को उचित ठहरा सकते हैं, इस तथ्य के बावजूद कि भगवान ने कहा था कि आशीर्वाद जैकब को मिलना चाहिए। उन्हें इसहाक को धोखा नहीं देना चाहिए था। बेशक, इसहाक को दोनों बेटों के बीच रिश्ते के लिए दैवीय रूप से प्रकट इच्छा को विफल करने का प्रयास नहीं

करना चाहिए था। मुझे ऐसा लगता है कि दोनों पक्ष गलती पर हैं और निस्संदेह, पक्षपात ने इसमें भूमिका निभाई है। यदि आप उत्पत्ति 25:28 को देखते हैं, तो आप पढ़ते हैं "इसहाक एसाव से प्रेम रखता था क्योंकि वह उसका हिरन का मांस खाता था, परन्तु रिबका याकूब से प्रेम करती थी।" इसलिए जहाँ पिता ने एक बेटे का पक्ष लिया, वहीं माँ ने दूसरे बेटे का पक्ष लिया। पिता एसाव को आशीर्वाद देना चाहता है, माँ याकूब के हितों का ध्यान रख रही है। निःसंदेह इसने इसमें एक भूमिका निभाई। लेकिन मुझे लगता है कि इसके बावजूद, ध्यान देने योग्य बात यह है कि पापपूर्ण मानवीय कार्यों के बीच, ईश्वर शासन करता है और अपनी इच्छा पूरी करता है। तो अंतिम परिणाम यह है कि जो आशीर्वाद याकूब के लिए था, वह याकूब को जाता है, न कि ईश्वर इस कार्य का समर्थन करता है। मनुष्य के पापपूर्ण कार्यों के बावजूद, ईश्वर शासन करता है और अपना उद्देश्य पूरा करता है।

इसलिए इसहाक सोचता है कि वह एसाव को आशीर्वाद दे रहा है, लेकिन इसमें याकूब के लिए भगवान की इच्छा शामिल है। वह आशीर्वाद अध्याय 27 के छंद 28 और 29 में है जहां इसहाक कहता है: "परमेश्वर तुझे आकाश की ओस, और पृथ्वी की उपजाऊ भूमि, और बहुतायत का अन्न और दाखमधु दे; लोग तेरी सेवा करें, और जाति जाति के लोग तुझे दण्डवत् करें।" अपने भाइयों पर प्रभु, तेरे माता-पिता तुझे दण्डवत् करें। जो कोई तुम्हें शाप दे वह शापित हो, और जो तुम्हें आशीर्वाद दे वह धन्य हो।" इसलिए वह आशीर्वाद याकूब पर रखा गया है, हालाँकि वह सोचता है कि यह एसाव पर है। ध्यान दें कि वह वादे की पुनरावृत्ति के साथ समाप्त होता है, इब्राहीम से भगवान के वादों में से एक, "धन्य है वह जो तुम्हें आशीर्वाद देता है, वह शापित है जो तुम्हें शाप देता है।"

खैर, जब इसहाक को पता चला कि क्या हुआ है तो वह बहुत परेशान हो गया। आप आयत 33 में पढ़ते हैं: "इसहाक बहुत कांप उठा और बोला, 'फिर वह कौन था, जो शिकार का शिकार करके मेरे पास लाया? तुम्हारे आने से ठीक पहले मैंने इसे खाया था और मैंने उसे आशीर्वाद दिया था - और वास्तव में वह धन्य होगा! " यह एसाव के आने के बाद हुआ और इसहाक को एहसास हुआ कि क्या हुआ था।

एसाव की प्रतिक्रिया और एसाव का "आशीर्वाद"

अब एलिसन, उसी पुस्तक, *द फादर्स ऑफ द कोवेनेंट में*, श्लोक 33 के इस बिंदु पर यह बयान देते हैं, वह कहते हैं, "यह कहानी में बहुत कुछ का सुराग है, चाहे हम इसहाक की कितनी भी आलोचना करें, वह एक ही रहेगा आस्था के नायकों की. ऐसे कई पल आए होंगे जब उन्हें लगा होगा कि आखिर उनकी पत्नी सही नहीं है. अब अचानक उसे पता चला, उसे कोई संदेह नहीं था कि यह याकूब ही था जो उसके पास आया था, और वह परमेश्वर की इच्छा के सामने झुक गया। यहाँ तक कि एसाव के आँसू भी उसे हिला न सके। हालाँकि उसने आयत 35 में याकूब की चालाकी के बारे में बात की थी, लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है कि उसने कभी उसे या रिबका को डांटा था। वह जानबूझकर और स्वेच्छा से उसे फिर से आशीर्वाद देने के लिए तैयार था, और वह ऐसा अध्याय 28 की शुरुआत में करता है जब जैकब मेसोपोटामिया में लाबान के घर जाने के लिए अपने घर से भाग जाता है।

अब, निस्संदेह, एसाव के साथ, स्थिति अलग है। जब एसाव को पता चलता है कि क्या हुआ है तो वह क्रोधित हो जाता है, जैसा कि आप पद 34 में पढ़ते हैं; "जब एसाव ने अपने पिता की बातें सुनीं, तब वह बड़े और अत्यंत दुःख से चिल्लाया, और अपने पिता से कहा, 'हे मेरे पिता, मुझे भी आशीर्वाद दे।'" और उसके पिता कहते हैं, "तुम्हारा भाई चतुराई के साथ आया और तुम्हारा आशीर्वाद छीन लिया है।" आयत 36 के अंत में वह कहता है, "क्या तू ने मेरे लिये कोई आशीर्वाद नहीं रखा?" और नई शराब. तो मैं संभवतः तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ, मेरे बेटे?' एसाव ने अपने पिता से कहा, हे मेरे पिता, क्या तेरे पास एक ही आशीष है? मुझे भी आशीर्वाद दो, मेरे पिता!' तब एसाव जोर-जोर से रोने लगा। उसके पिता इसहाक ने उसे उत्तर दिया…"

श्लोक 39 और 40 में आपको मिलता है और मैं इसे उद्धरणों में कहूंगा, वह "आशीर्वाद" जो एसाव को दिया गया है। वहां एक अनुवाद मुद्दा है जो कुछ महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जो चल रहा है उसके बारे में एक बहुत अलग समझ देता है। यदि आप श्लोक 28 की तुलना श्लोक 39 से करते हैं, तो आप किंग जेम्स और एनआईवी अनुवाद में अंतर देख सकते हैं। श्लोक 28 वह आशीर्वाद है जो इसहाक ने याकूब को यह सोचकर दिया था कि यह एसाव है, 39 वह "आशीर्वाद" है जो वह बाद में एसाव को देता है। यदि आप उन्हें पढ़ते हैं, तो वे बहुत हद तक एक जैसे हैं, विशेष रूप से यदि आप

इसे किंग जेम्स में पढ़ते हैं, तो किंग जेम्स में देखें, यह कहता है: "देखो, तुम्हारा निवास भूमि की उपजाऊ भूमि और ओस की ओस में होगा।" ऊपर से स्वर्ग, और तू अपनी तलवार के बल जीवित रहेगा, और अपने भाई के आधीन रहेगा; और जब तू प्रभुता करेगा, तब तू उसका जुआ अपनी गर्दन पर से उतार देगा।" अब, वाक्यांश वही हैं; स्वर्ग की ओस/स्वर्ग की ओस, पृथ्वी का मोटापा/पृथ्वी का मोटापा, वे बस क्रम में उलटे हैं। पद 28 में, "इसलिये परमेश्वर तुम्हें आकाश की ओस और पृथ्वी की उपजाऊ उपज में से देता है।" 39 में; "तुम्हारा निवास भूमि की उपजाऊ भूमि और आकाश की ओस में होगा।" वह दो वाक्यांशों को उलट देता है। यह 27 और 28 होना चाहिए.

वह अंतर का बिंदु इस पूर्वसर्ग के अनुवाद को चालू करता है। हिब्रू में यह एक *मिनट* पूर्वसर्ग है, और सवाल यह है कि क्या उस *मिनट को स्रोत के मिनट* या पृथक्करण के *मिनट के* रूप में समझा जाना चाहिए । यदि आप इसे दोनों ही मामलों में स्रोत के एक *मिनट के रूप में समझते* हैं, तो एसाव को जो आशीर्वाद दिया गया है वह मूल रूप से उसी के समान है जो पहले जैकब को दिया गया था। यदि आप इसे पृथक्करण के एक *मिनट के रूप में लेते* हैं, तो आप जो कह रहे हैं वह ऐसा है जैसे एनआईवी कहता है, "आप पृथ्वी की समृद्धि से दूर रहेंगे, और स्वर्ग की ओस से दूर रहेंगे।" दूसरे शब्दों में, वास्तव में यह एक आशीर्वाद नहीं, बल्कि एक अभिशाप है: "आपका निवास पृथ्वी की संपदा से दूर हो जाएगा।" निःसंदेह, एसाव के साथ बिल्कुल यही मामला था, क्योंकि एसाव एदोम बन गया, और एदोम मृत सागर के दक्षिण में उस जंगल में रहने लगा। वह बंजर स्थान था, वह पृथ्वी की समृद्धि से दूर, स्वर्ग की ओस से दूर था। मुझे लगता है कि इसहाक जो करता है, आप देखते हैं, वह एक अर्थ में उस पहली कविता के समान ही आशीर्वाद देता है, लेकिन इस पूर्वसर्ग के उपयोग और जहां तक अर्थ का संबंध है, इरादे के आधार पर इसमें अस्पष्टता है। मुझे लगता है कि यह जैकब के साथ जैसा था उसके विपरीत था।

फिर यह निश्चित रूप से श्लोक 40 में आगे बढ़ता है और कहता है; "और तू अपनी तलवार के बल जीवित रहेगा, और अपने भाई की अधीनता करेगा; और जब तू प्रभुता करेगा, तब उसका जुआ अपनी गर्दन पर से उतार डालेगा।" यहां आपको जो कुछ संकेत मिलता है वह इज़राइल और एदोम, यानी याकूब के वंशज और एसाव के वंशजों के बीच संबंधों का बाद का इतिहास है। विभिन्न समयों पर, एदोमियों को इस्राएल के अधीन किया गया। दाऊद ने शुरू में एदोमियों को अपने

अधीन कर लिया और उनके क्षेत्र में किले बना दिये। वह आगे-पीछे होता रहा। कई बार वे इसराइल का जुआ उतार फेंकने में सफल रहे, लेकिन फिर उन्हें फिर से अधीन कर दिया गया।

यह वास्तव में अंतरविधान काल तक चलता रहा जब एदोमियों को अंततः उनके ही क्षेत्र से बाहर दक्षिण की ओर धकेल दिया गया। वे आकर दक्षिणी यहूदा में बस गए और मैकाबीज़ ने उन्हें जबरन यहूदी बना दिया। अर्थात्, उनसे खतना कराया गया, मूसा की व्यवस्था का पालन किया गया, इत्यादि। वे "एदोम" पदनाम के ग्रीक से, इडुमीन्स के रूप में जाने गए। और यह उस स्टॉक से बाहर है कि हेरोदेस महान घटनास्थल पर आया। बेशक हेरोदेस महान, यहूदियों का शापित राजा था। तो तुम्हें एदोमियों और इस्राएलियों के बीच यह संघर्ष मिलता है; जैकब और एसाव, पुराने टेस्टामेंट के बाद के इतिहास में, इंटरटेस्टामेंट अवधि के माध्यम से, हेरोदेस महान तक फैले हुए हैं, जो खुद एक इडुमियन था।

इसहाक के अंतिम दिन अध्याय 35:27-29; “याकूब किर्यत के पास मम्रे में अपने पिता इसहाक के घर आया अरबा (अर्थात् हेब्रोन), जहां इब्राहीम और इसहाक ठहरे थे। इसहाक एक सौ अस्सी वर्ष जीवित रहा। फिर उसने आखिरी साँस ली और मर गया और बूढ़े और जवान होकर अपने लोगों में जा मिला। और उसके पुत्र एसाव और याकूब ने उसे मिट्टी दी। तो निःसंदेह, यह उत्पत्ति की कथा में काफी हद तक आगे बढ़ता है, लेकिन हम इसहाक के जीवन के अंतर्गत इस बिंदु पर इस प्रकार को देख रहे हैं। उनकी मृत्यु अध्याय 35 में दर्ज की गई थी।

बेथेल में एफ. जैकब जैकब

एल और हम एफ की ओर बढ़ते हैं, जो है: "जैकब।" पहला, "बेथेल में जैकब," हम वापस जायेंगे और इसहाक के धोखे की घटना के ठीक बाद उठाएंगे। अध्याय 28 हमें बताता है कि इसहाक को धोखा देने के बाद याकूब ने घर छोड़ दिया। आप अध्याय 27 में, इसकी पृष्ठभूमि के रूप में, पद 41 पाते हैं, “और एसाव ने याकूब को आशीर्वाद के कारण बैर किया, और एसाव ने अपने मन में कहा, मेरे पिता के शोक के दिन निकट आए हैं, तब मैं अपने भाई याकूब को घात करूंगा। और उसके बड़े बेटे एसाव की ये बातें रिबका को बताई गईं, और उसने अपने छोटे बेटे

याकूब को बुलाकर उससे कहा, सुन, तेरा भाई एसाव तुझे छूकर तुझे मार डालना चाहता है। इसलिये अब मेरा पुत्र मेरी बात मानकर हारान को अपने भाई लाबान के पास भाग जा, और जब तक तेरे भाई का क्रोध शान्त न हो जाए तब तक कुछ दिन तक उसके पास रह। जब तक तेरे भाई का क्रोध तुझ पर से शान्त न हो जाए, और वह भूल न जाए कि तू ने उसके साथ क्या किया है, तब तक मैं किसी को भेजकर तुझे वहां से बुला लाऊंगा। मैं एक ही दिन में तुम दोनों से क्यों वंचित रह जाऊँ?" विचार यह है कि यदि एसाव ने वास्तव में याकूब को मार डाला तो उसके पास याकूब नहीं होगा और एसाव की जान भी ले ली जाएगी, और वह अपने दोनों बेटों को खो देगी। इसलिए वह चाहती है कि जैकब चले जाए और उस संदर्भ से बाहर निकल जाए।

याकूब का आशीर्वाद दोहराया गया यह दिलचस्प है कि वह अध्याय 27 श्लोक 46 में इसहाक के साथ क्या करती है। पद 46 में वह इसहाक के पास जाती है और कहती है: "मैं हित्ती बेटियों के कारण अपने जीवन से ऊब गई हूं, यदि याकूब हित्ती बेटियों में से, जैसे देश की लड़कियों में से हैं, स्त्री ले ले, तो क्या लाभ क्या मेरा जीवन मेरा काम करेगा?" इसलिए वह वास्तव में जैकब के जीवन के लिए चिंतित है, लेकिन जब वह इसहाक से बात करती है तो वह इस बात पर यह दूसरी तस्वीर डालती है कि उसे चिंता है कि जैकब कनानियों में से किसी से शादी नहीं करेगा। इसलिए इसहाक ने अध्याय 28 के पहले भाग में याकूब को बुलाया और उससे कहा: "तू कनान की लड़कियों से विवाह न करना। उठो, पद्दनराम को अपने नाना बतूएल के घर जाओ , और वहां अपने मामा लाबान की बेटियों में से एक को ब्याह लो। फिर वह यह आशीर्वाद दोहराता है; "और सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम्हें आशीष दे, और फलवन्त करे, और बढ़ाए, कि तुम बहुत लोग हो जाओ। वह तुम्हें और तुम्हारे वंश को इब्राहीम की सी आशीष दे, कि तुम उस देश के अधिकारी हो जाओ जिस में तुम परदेशी हो, और जिसे परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया है। तो आपके पास वादे की पंक्ति की निरंतरता है। अत: याकूब चला गया और वह हारान को चला गया।

बेतेल में याकूब [याकूब की सीढ़ी] मैंने इसे पहले ही लगा दिया है, लेकिन इसे फिर से देखो, पीढ़ियों, यहां रिबका को देखो, जिसका भाई लाबान था, और एसाव और याकूब भाई हैं। जैकब

लाबान के घर जाता है और अंततः लिआ और राहेल दोनों से शादी करता है, जो लाबान की बेटियां हैं, यह निश्चित रूप से बहुत आगे की बात है। रास्ते में, वह बेथेल में एक रात आराम करने के लिए रुकता है और बेथेल में प्रभु उसे सपने में दिखाई देते हैं। यह पद 12 में है और अध्याय 28 में निम्नलिखित है। आपने पढ़ा: "उसने एक स्वप्न देखा, जिसमें उसने एक सीढ़ी पृथ्वी पर टिकी हुई देखी, जिसका शीर्ष स्वर्ग तक पहुंच रहा था, और परमेश्वर के दूत उस पर चढ़ और उतर रहे थे। उसके ऊपर यहोवा खड़ा था, और उसने कहा: "मैं यहोवा, तुम्हारे पिता इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर हूं। मैं तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को वह भूमि दूंगा जिस पर तुम लेटे हो। तुम्हारे वंशज भी उनके समान होंगे।" पृथ्वी की धूल, और तू पच्छिम, पूर्व, उत्तर, दक्खिन तक फैल जाएगा। पृथ्वी के सब कुल तेरे और तेरे वंश के द्वारा आशीष पाएंगे। मैं तेरे संग हूं, और जहां कहीं तू हो वहां तेरी रक्षा करूंगा जाओ, और मैं तुम्हें इस देश में वापस ले आऊंगा। मैं तुम्हें तब तक नहीं छोड़ूंगा जब तक कि मैंने तुमसे जो वादा किया है उसे पूरा नहीं कर लेता।

अब याकूब के जीवन में इस बिंदु पर प्रभु अभी तक व्यक्तिगत रूप से उसके सामने प्रकट नहीं हुए थे और इब्राहीम से इसहाक को दिए गए इस वादे की पुष्टि नहीं की थी। अब हम तीसरी पीढ़ी, याकूब की ओर बढ़ रहे हैं, लेकिन उसके जीवन के इस बिंदु तक, जब वह एसाव से भाग रहा है, और लाबान के घराने से पत्नी की तलाश करने जा रहा है। जब वह सोता है तो भगवान उसके पास आते हैं और मुझे लगता है कि मुद्दा फिर से है: भगवान पहल करता है और वह इब्राहीम के वादे को दोहराता है, जो पहले ही इसहाक को दोहराया गया था, और फिर इसमें जोड़ता है, कि वह उसके साथ रहेगा। यात्रा, और अंततः उसे कनान देश में वापस ले आओ।

अब स्वप्न में, श्लोक 12 में आपने पढ़ा, "वहाँ एक सीढ़ी थी, जिसका शीर्ष स्वर्ग तक पहुँच रहा था, और परमेश्वर के दूत उस पर चढ़ते और उतरते थे।" मुझे ऐसा लगता है कि यह ईश्वर और जैकब के बीच एकता का प्रतीक है। स्वर्गदूत याकूब की ज़रूरतों को लेकर परमेश्वर के पास चढ़ते हैं: याकूब भयभीत था, वह अपने जीवन के लिए भाग रहा था। फिर वे याकूब के लिए परमेश्वर की कृपा और आशीर्वाद के साथ उतरते हैं। जहां तक सपने में प्रतीकवाद के महत्व का सवाल है तो यह कम से कम एक सुझाव है। जब आप अध्याय के अंत में पहुँचते हैं, उस प्रतिज्ञा को प्राप्त करने के बाद, वह श्लोक 16 में जागता है। वह कहता है, "निश्चय ही प्रभु इस स्थान पर है" और वह एक

पत्थर लेता है और उसे स्थापित करता है, और उस पर तेल डालता है। आयत 19 में वह उस स्थान का नाम "बेथेल" कहता है जिसका हिब्रू में अर्थ है "भगवान का घर।"

फिर श्लोक 20 से 22 में, वह प्रतिज्ञा करता है, और वह कहता है: "यदि परमेश्वर मेरे संग रहेगा, और मुझे इस मार्ग से बचाए रखेगा, और मुझे खाने को रोटी, और पहिनने को वस्त्र देगा, मैं अपने पिता के घर में कुशल से लौट आया हूं। मैं निश्चय तुझे दसवाँ हिस्सा दूँगा।" अब ल्यूपोल्ड , आपकी ग्रंथ सूची के पृष्ठ 14 के मध्य में , पृष्ठ 779-780, उत्पत्ति पर अपनी टिप्पणी में सुझाव देते हैं कि वह अनुवाद सबसे अच्छा अनुवाद नहीं है, क्योंकि वह श्लोक 22 की शुरुआत में एपोडोसिस को सशर्त वाक्य में डाल देंगे। श्लोक 21 के अंत के बजाय। जो अंतर पैदा करता है वह यह है, आप 21 पढ़ते हैं: "ताकि मैं अपने पिता के घर में शांति से लौट आऊं और यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरे, तब यह पत्थर जो मैं ने खम्भा ठहराया है वह ठहरेगा।" भगवान का घर बनो।" किंग जेम्स के अनुवाद के साथ, और मेरा मानना है कि यह एनआईवी और एनएएसवी का भी अनुवाद है, ल्यूपोल्ड कहते हैं; यदि इसे पहले रखा जाए तो एपोडोसिस एक सस्ती भाड़े की भावना को चित्रित करेगा, जो भगवान के साथ सौदेबाजी कर रही है। दूसरे शब्दों में, यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप मेरे भगवान होंगे। जबकि यदि आप श्लोक 22 की शुरुआत में एपोडोसिस डालते हैं, जो आप हिब्रू में कर सकते हैं, तो निर्माण वही होगा। यह तो बस एक *वाह है.* यह एक प्रासंगिक बात है, जिसमें निर्णय लेना है कि कौन सा तरीका अपनाना सबसे अच्छा है। यह निर्णय करना कठिन है. वह कहता था, "ताकि मैं अपने पिता के घर में फिर आऊं, और यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरे, तब यह पत्थर जो मैं ने खड़ा किया है वह परमेश्वर का भवन ठहरेगा।"

अब ल्यूपोल्ड जो कहता है उसके विपरीत , एल्डर्स अपनी टिप्पणी में, अनुवाद को पसंद करते हैं जैसा कि मैंने इसे पढ़ा है, और वह कहते हैं, उन्हें लगता है कि यह इंगित करता है कि "जैकब अभी तक भगवान के रूप में, भगवान के प्रति बिना शर्त प्रतिबद्धता के बिंदु तक नहीं पहुंचा था। तो वह वास्तव में अभी भी भगवान के साथ मोलभाव कर रहा है। यह इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर की सेवा में वह अभी भी कुछ हद तक स्वार्थी है। उसने अभी तक अपना जीवन पूरी तरह से भगवान की सेवा में समर्पित नहीं किया है। वह बाद के अध्याय 32 श्लोक 24-30 तक उस बिंदु तक नहीं पहुंचता है। मुझे लगता है कि यह कहना मुश्किल है, यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे हम हिब्रू

निर्माण को देखकर स्पष्ट कर सकते हैं, यह कुछ ऐसा है जिसकी व्याख्या की जाती है: क्या वह वास्तव में सौदेबाजी कर रहा है? तब यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा; तुम अपने आप को मेरे साम्हने सिद्ध करोगे, तब मैं तुम्हें अपना परमेश्वर मानूंगा? मुझे लगता है यह संभव है.

2. हारान में वर्ष - जनरल 29-31 संख्या 2. है: "हारान में वर्ष, अध्याय 29-31।" हारान में बहुत सी चीजें घटित होती हैं। मुझे लगता है कि जिस बात पर ज़ोर देने की ज़रूरत है, बस बड़ी तस्वीर पाने के लिए आप कह सकते हैं, वह यह है कि हारान में, ग्यारह बेटों के जन्म में बीज के गुणन का वादा शुरू से ही पूरा होता है। हारान में ऐसा ही होता है, याकूब हारान जाता है, वह शादी करता है, और ग्यारह बच्चे पैदा होते हैं, सभी एक पत्नी, दो पत्नियों और दो रखैलों से नहीं , बल्कि ग्यारह बच्चे पैदा होते हैं। वे ग्यारह बच्चे इस्राएल के गोत्रों के मुखिया बन गए। तो, देखिए यह महत्वपूर्ण है, यह इस वादे के साथ आगे बढ़ रहा है, महान बीज, हारान की घटनाओं में पूरा हो रहा है।

जैकब, राहेल, और लिआ ठीक है, वापस जाओ और कथा उठाओ, जब वह आता है, तो उसकी चचेरी बहन राहेल से मुलाकात होती है, और उसके चाचा उसे लाबान के पास ले जाते हैं। एक महीने तक वहां रहने के बाद, वह राहेल को अपनी पत्नी के रूप में प्राप्त करने के लिए अपने चाचा के लिए सात साल तक काम करने के लिए सहमत हो गया। आप आयत 16 में पढ़ते हैं: “लाबान की दो बेटियाँ थीं: बड़ी का नाम लिआ: और छोटी का नाम राहेल था। लिआ की आँखें कोमल थीं, परन्तु राहेल सुन्दर और दयालु थी। और याकूब राहेल से प्रेम रखता था, और उसने कहा, मैं तेरी छोटी बेटी राहेल के लिथे सात वर्ष तक तेरी सेवा करूंगा। तो वह समझौता हो गया. सात वर्ष तक काम करने के बाद जब विवाह के भोज का समय आया, तो लाबान ने राहेल की सन्ती याकूब लिआ को दे दिया। आप इसे श्लोक 21 और निम्नलिखित में पाते हैं: "और याकूब ने लाबान से कहा, मेरी पत्नी मुझे दे दे, क्योंकि मेरी आयु पूरी हो गई है, कि मैं उसके पास जा सकूं। और लाबान ने उस स्थान के सब पुरूषोंको इकट्ठा करके जेवनार की। और सांझ को ऐसा हुआ कि वह अपनी बेटी लिआ को अपने पास ले आया, और वह उसके पास गया। और लाबान ने अपनी बेटी लिआ: की दासी के लिये अपनी दासी जिल्पा दी। और ऐसा हुआ कि बिहान को वह लिआ ही थी,

और उस ने लाबान से कहा, तू ने मुझ से यह क्या किया है? क्या मैं ने राहेल के लिथे तुम्हारे साय सेवा न की? फिर तू ने मुझे क्यों बहकाया है?' और लाबान ने कहा, हमारे देश में ऐसा न हो, कि पहिलौठे से पहिले छोटी को ब्याह दिया जाए। उसका सप्ताह पूरा करो, और हम तुम्हें उस सेवा के बदले यह भी देंगे जो तुम अगले सात वर्षों तक मेरे साथ करोगे।"

अब, मुझे लगता है कि उस कथा को, कम से कम मेरे लिए, यह समझना मुश्किल है कि वास्तव में ऐसा कैसे हो सकता है। लेकिन याद रखें, वे दावतें मना रहे थे और जश्न मना रहे थे, और यह कहता है कि, "ऐसा हुआ कि शाम को वह लिआ को ले गया।" वे शायद घूंघट में थीं, उस समय की महिलाएं। लिआ स्पष्ट रूप से इस योजना की इच्छुक भागीदार थी। और किसी भी मामले में, जैकब आश्चर्यचकित है कि उसके पास राहेल के बजाय लिआ है। उसने बहाना दिया कि हम छोटी बेटी को बड़ी बेटी से पहले नहीं देते। अब निःसंदेह, आप सोचेंगे कि यह बात तब समझ में आनी चाहिए थी जब पहली व्यवस्था की गई थी। मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि लाबान जैकब के साथ छेड़छाड़ कर रहा है। आप इसकी विडंबना देखिए, इस बिंदु पर याकूब वह है जिसे धोखा मिलता है, जैसे उसने पहले अपने पिता इसहाक को धोखा दिया था। तो अगली पीढ़ी में आपको इसका उल्टा मिलेगा।

लेकिन शादी के एक हफ्ते के जश्न के बाद, उसे अपनी दूसरी पत्नी, पहली की बहन, मिल जाती है। वास्तव में मेरे पास इतना विकास करने का समय नहीं है, मैं अगले घंटे की शुरुआत में यहां आऊंगा। अभी मुझे कुछ ऐसा मिला जो मैं आपको पढ़ना चाहता हूं, हम यहीं रुकेंगे। यह *इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी के जर्नल* के अंतिम अंक से है । यहां एक पुस्तक की समीक्षा है जिसका नाम है "बाइबिलिकल लिमरिक, ओल्ड टेस्टामेंट स्टोरीज़ रिवर्स्ड" और कुछ चित्र दिए गए हैं, फिर से यह पुस्तक स्पष्ट रूप से पुराने टेस्टामेंट की विभिन्न स्थितियों की लिमरिक है। लेकिन उनमें से एक जो इस समीक्षा में यहां दिया गया है है:

"जैकब ने अपना पूरा कार्यकाल पूरा किया,
राहेल को बिना किसी संकेत के जीतना,
वह कुछ भी अजीब था,
और लाबान इतना धूर्त,

अब कहा, नौसिखिया, बढ़िया प्रिंट पढ़ें।

चिस स्कारबोरो द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा
कच्चा और अंतिम संपादन टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया